International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 16-04-2025, Accepted: 15-05-2025, Published: 30-05-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 178-179

रेवाड़ी के नगरीकरण का सांस्कृतिक प्रभावः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

रवीना[1], डॉ. आशा कुमारी सिंह[2]
[1] शोधार्थी, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक जिला, राजस्थान, भारत
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक जिला, राजस्थान, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhssr.2025.11.3.12300

सारश
रेवाड़ी नगर हरियाणा राज्य का ऐतिहासिक नगर है। यह नगर अपने इतिहास, सांस्कृतिक विकास व प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। रेवाड़ी नगर को किसी विशेष योजना के अनुसार नहीं बसाया गया है बल्कि यह नगर गावों का ही परिवर्तित व विकसित रूप है। कालांतर में आवश्यकता अनुसार बाजार व मंडियों की स्थापना, व्यापार–वाणिज्य संबंधी गतिविधियों ने रेवाड़ी के नगरीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रेवाड़ी के नगरीकरण की प्रक्रिया ने बीतें कुछ दशकों में व्यापक परिवर्तन लाए हैं। यह परिवर्तन न केवल भौतिक संरचना में दिखाई देते हैं, बल्कि रेवाड़ी की सांस्कृतिक पहचान पर भी गहरा प्रभाव डाला है। पहले रेवाड़ी की संस्कृति ग्रामीण जीवन शैली, पारंपरिक रीति–रिवाज, मेलों, लोक गीतों व सामाजिक एकता पर आधारित थी। यहाँ के लोग पारंपरिक वेशभूषा, भाषा एवं खानपान को महत्व देते थें, परंतु अब शहरीकरण के कारण इन परंपराओं में धीरे–धीरे गिरावट देखने को मिल रही है। आधुनिकता के भेष में पश्चिमी सभ्यता की झलक दिखाई देती है जिसने युवाओं को विशेषतयः प्रभावित किया है। आधुनिक भवनों, इमारतों, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, शिक्षण संस्थानों की बढ़ती संख्या ने जीवनशैली को पूरी तरह बदल दिया है। लोक कला, संगीत व नृत्य कला अब केवल सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक सीमित रह गए हैं। हालांकि नगरीकरण से महिलाओ की स्थिति में सुधार, रोजगार के अवसर, क्षेत्रीय कलाओं को संरक्षण, शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार हुआ है, परंतु इसके साथ ही रेवाड़ी की सांस्कृतिक जड़ों का भी क्षरण हुआ है। अतः आवश्यकता है की आधुनिकता के साथ सांस्कृतिक विरासत का भी संरक्षण किया जाए, जिससे रेवाड़ी नगर की वास्तविक पहचान बनी रहे।

मुख्य शब्दः नगरीकरण, संस्कृति, ऐतिहासिक, रेवाड़ी, बहुआयामी प्रक्रिया, नगरोन्मुख, परंपरा, आधुनिकता, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक प्रभाव

रेवाड़ी नगर हरियाणा का एक ऐतिहासिक नगर है। आज तीव्र नगरीकरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है। यह शहर न केवल अपने समृद्ध इतिहास, वीर परंपरा और ग्रामीण संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि हाल ही के वर्षों में व्यापार–वाणिज्य, शिक्षण संस्थानों एवं आधुनिक सुविधाओं के कारण एक शहरी केंद्र के रूप में उभर रहा है। नगरीकरण से अभिप्राय नगरीय वृद्धि से है। यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो आर्थिक विकास की मुख्य विशेषताओं मे से एक है। इसमे नगरों से संबंधित बातें शामिल होती हैं। नगरीकरण नगरीय होने या बननें, नगरोंन्मुख गति, प्राथमिक व्यवसाय तथा ग्रामीण जीवन पद्धति को छोड़ कर द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र के व्यवसाय की क्रियाओं को अपनाने की सामान्य प्रक्रिया है। रेवाड़ी क्षेत्र में नगरीकरण से जहां आर्थिक प्रगति और विकास के नए अवसर मिले हैं, वहीं इसने स्थानीय समाज, परंपराओं, लोक संस्कृति और जीवन शैली पर गहरा प्रभाव भी डाला है। यह शोध पत्र इन्ही सकारात्मक और नकारात्मक सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

रेवाड़ी क्षेत्र में नगरीकरण के कारण

रेवाड़ी के नगरीकरण में प्राकृतिक कारकों की मुख्य भूमिका रही है। ग्रामीण तथ्यों की उपेक्षा करके रेवाड़ी के नगरीकरण के विकास को उल्लेखित नहीं किया जा सकता है। इसके नगरीकरण में कृषि व पशुपालन की भी विशेष भूमिका रही है। यह नगर व्यापारिक मार्गों पर स्थित है। रेवाड़ी जलवायु की दृष्टि से एक धनी क्षेत्र है। यहाँ की मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ है, जिससे पैदावार होती है। कृषि अधिशेष से ही व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला एवं अनेक अनाज मंडियों की स्थापना हुई। यहाँ से अनेक नदियों का बहना, भौगोलिक स्थिति, मैदानी क्षेत्र, खनिज सम्पदा, अरावली की पहाड़ियाँ एवं उपजाऊ भूमि इसकी धरोहर हैं। इसके अतिरिक्त व्यापारिक गतिविधियों में यातायात के साधनों की भी विशेष भूमिका रही है, जिससे अधिक से अधिक कस्बों व नगरों से संबंध स्थापित हुआ। आधुनिक युग में यह नगर व्यापार का प्रमुख केंद्र बन गया है। रोजगार की प्राप्ति हेतु भी लोगों का आकर्षण इस नगर की तरफ बढ़ रहा है। रेवाड़ी नगर के उत्तर दिशा में झज्जर, पश्चिम दिशा में महेंद्रगढ़ जिला, दक्षिण–पूर्व दिशा में राजस्थान का अलवर जिला रेवाड़ी को छूतें हैं, उत्तर–पूर्व दिशा में जिला गुडगावं है। यह नगर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से दक्षिण–पश्चिम दिशा में 82 किलोमीटर दूर दिल्ली–जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 8 के निकट स्थित है। दिल्ली राजधानी से निकटता इसके आर्थिक विकास को अधिक प्रभावित करती है।

रेवाड़ी के नगरीकरण का संस्कृति पर प्रभाव

जैसा की विदित है, रेवाड़ी का प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक महत्व रहा है। यह नगर अपनी वीरता और शौर्य के लिए प्रसिद्ध रहा है (विशेषकर राजा राव तुलाराम के कारण)। पहले यह नगर ग्रामीण परिवेश से जुड़ा था, परंतु अब यहाँ नई कॉलोनियाँ, नगर परिषद, रेलवे जंक्शन, शिक्षण संस्थान आदि के विकास ने इसे आधुनिक स्वरूप दे दिया है। नगरीकरण ने न केवल रेवाड़ी की अर्थव्यवस्था बल्कि इसके समाज और संस्कृति को भी प्रभावित किया है। नगरीकरण से रेवाड़ी क्षेत्र में नए सामाजिक वर्ग, शहरी मध्यम वर्ग का उदय हुआ है। शहरी मध्यम वर्ग की जीवन शैली, मूल्य और विश्वास में विशेष परिवर्तन आया है। नगरीकरण ने एकल परिवारों के विकास को भी प्रेरित किया है और परिवार संरचना एवं गतिशीलता मे परिवर्तन में योगदान दिया है। नगरीकरण का रेवाड़ी के सामाजिक ताने–बाने पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। नगरीय क्षेत्रों के विकास के साथ, ग्रामीण क्षेत्रों से

लोगों का आगमन हुआ, जिससे शहरी क्षेत्रों मे विविध समुदायों का विकास हुआ है। इससे सांस्कृतिक आदान–प्रदान हुआ है और पारंपरिक कला और शिल्प के संरक्षण मे मदद मिली है। इसके अतिरिक्त नगरीकरण ने शहरी क्षेत्रों मे रहने वाले लोगों के लिए साक्षरता दर और शैक्षिक अवसरों में वृद्धि की है। विद्यालयों की स्थापना एवं शहरी क्षेत्रों के कॉलेजों ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे रेवाड़ी क्षेत्र में नारी सशक्तिकरण को भी बढ़ावा मिला है। हालांकि तेज गति से हो रहे नगरीकरण ने शहरी विकसित क्षेत्रों में झुग्गियों व अनौपचारिक बस्तियों के फैलाव को भी बढ़ावा दिया है, जिससे यहाँ रहने वाले लोगों की स्थिति अत्यंत दयनीय है और भूखमरी और बेरोजगारी की समस्या ने इस क्षेत्र में अपराधों की संख्या में भी वृद्धि की है। इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को स्वास्थ्य संबंधी खतरों का भी सामना करना पड़ रहा है। रेवाड़ी क्षेत्र के नगरीकरण का प्रभाव हरियाणा राज्य की संस्कृति पर भी पड़ा है। राज्य के शहरी केंद्र अब सांस्कृतिक आदान–प्रदान का केंद्र बन गए हैं।

नगरीकरण के सकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव

रेवाड़ी में नगरीकरण से शिक्षण संस्थानों तथा तकनीकी संस्थानों का विकास हुआ जिससे युवाओं में आधुनिक विचारधारा और ज्ञान की वृद्धि हुई है । इसके अतिरिक्त रोजगार के अवसर बढ़े, जिसके कारण अलग–अलग राज्यों और समुदायों के लोग यहाँ बसने लगे हैं, जिससे विभिन्न भाषाओं, पहनावें और खानपान का संगम देखने को मिलता है। अतः सांस्कृतिक विविधता को भी बढ़ावा मिला। इस क्षेत्र की महिलाओं को भी शिक्षा और रोजगार के अवसर मिले हैं, जिससे पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन आया है और नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला। आधुनिक संचार माध्यमों और संगठनों के कारण समाज में समानता, स्वच्छता और पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ी है। लोक संस्कृति के आधुनिक रूपांतरण से पारंपरिक लोकनृत्य, गीत और मेलों को अब आधुनिक आयोजनों और मंचों पर नया रूप मिल रहा है, जिससे उनकी पहचान बनी हुई है। इस प्रकार रेवाड़ी क्षेत्र के नगरीकरण ने अनेक सकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव डालें हैं।

नगरीकरण के नकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव

रेवाड़ी के नगरीकरण से इस क्षेत्र में परंपराओं का क्षरण हुआ है क्योंकि आधुनिकता की दौड़ में पारंपरिक रीति–रिवाज, लोकगीत और सामुदायिक मेल–जोल धीरे–धीरे कम हो रहे हैं। इसके साथ ही सामाजिक विघटन हुआ है जिससे संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवार प्रणाली का प्रचलन बढ़ गया है और पारिवारिक एकता व सामूहिकता की भावना में कमी आई है। रेवाड़ी के नगरीकरण से लोग भौतिकता और उपभोक्ततावाद की तरफ आकर्षित हुए हैं, जिससे मानवीय संबंधों में दूरी और प्रतिस्पर्धा की भावना आईं है। रेवाड़ी के लोगों की भाषा व वेशभूषा में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। हरियाणवी बोली और पारंपरिक पहनावे की जगह आधुनिक फैशन और हिन्दी–अंग्रेजी मिश्रित भाषा ने ले ली है। आधुनिकता के भेष में पश्चिमीकरण की झलक मिलती है। इस क्षेत्र में जनसंख्या और वाणिज्यिक गतिविधियों के बढ़ने से न केवल पर्यावरण प्रभावित हुआ है, बल्कि सांस्कृतिक नैतिक मूल्यों में भी गिरावट आई है।

निष्कर्ष

रेवाड़ी में नगरीकरण ने जहां आधुनिकता और विकास के नए द्वार खोलें हैं, वही इसने पारंपरिक संस्कृति और सामाजिक मूल्यों के सामने नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं । यह आवश्यक है की विकास की इस प्रक्रियाँ मे स्थानीय लोकसंस्कृति, परम्पराएं और नैतिक मूल्य सुरक्षित रखें जाएं। अतः रेवाड़ी में संतुलित नगरीकरण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए अर्थात जिसमे आधुनिकता और परंपरा दोनों का समन्वय हो। संतुलित नगरीकरण ही रेवाड़ी के सतत् और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भविष्य की कुंजी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हरियाणा राज्य अभिलेखागार, पंचकूला.
2. हरियाणा जनगणना रिपोर्ट्स (1971–2011)
3. रेवाड़ी जिला जनगणना रिपोर्ट्स (1991 2011)
4. गुड़गावं जिला गजेटियर.
5. चाइल्ड, वी गार्डन (1950) *द अर्बन रिवोल्यूशन,* यूनिवर्सिटी प्रेस लंदन.
6. यादव, के. सी. (1999) *रेवाड़ी इतिहास के झरोखे से,* हरियाणा हिस्टॉरिकल सोसाइटी, गुड़गावं.
7. यादव, के. सी. (2000) अहीरवाल इतिहास एवं संस्कृति, हरियाणा हिस्टॉरिकल सोसाइटी गुड़गावं.
8. यादव, के. सी. (2007) राव तुलाराम 1857 के अमर सेनानी, हरियाणा साहित्यिक अकादमी पंचकूला.
9. बंसल, सुरेश चंद्र (2011) नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ.
10. खुल्लर, डी आर (2011) भारत का भूगोल, मेक्ग्रा हिल्स, दिल्ली.
11. यादव, के. सी. (2012) मॉडर्न हरियाणा हिस्ट्री एण्ड कल्चर (1803–1966), मनोहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली.
12. चौहान, ओ. पी. (2020) नगरीकरण और सामाजिक परिवर्तन, समाजशास्त्र प्रकाशन.
13. राय, डॉ सतीश, हरियाणा में नगरीकरण, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
14. रामचंद्रन, आर. अर्बनाईजेशन इन हरियाणा, ऑक्सफोर्ड प्रेस.
15. सिंह, एम पी (2007) हरियाणा में शहरीकरण – एक भौगोलिक विश्लेषण,, कान्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली.
16. यादव, के. सी. हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति खंड 2 (1803 से 1966 तक), इतिहास विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र.
17. त्रिवेदी, प्रिय रंजन : हरियाणा भूत, वर्तमान एवं भविष्य, ज्ञानदा प्रकाशन एवं भारतीय विश्वविद्यालय परिसंघ, नई दिल्ली.
18. सिसोदिया, डॉ राजकुमार : मध्ययुगीन हरियाणा निरन्तरता एवं परिवर्तन, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली.
19. यादव, डॉ अतुल, हरियाणा : ऐतिहासिक धरोहर, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला.
20. भारद्वाज, चंद्रशेखर, इतिहास, समाज, कला व संस्कृति, विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
21. Kumari S. An Analysis of Urbanization in Haryana. International Journal for Research Publication & Seminar, 2022, 13(1).
22. Singh G. Smart City Mission, Urbanization and its Challenges: A case study of Haryana. International Journal of Scientific Research in Science and Technology, 2019, 6(4).
23. Deepika. Trends and Patterns of Urbanization in Haryana. Research Review International Journal of Multidisciplinary, 2019, 4(3).
24. Rahul. Pattern of Urbanization and the Contribution of Migration to Urban Growth in Haryana & India. Indian Journal of Spatial Science, 2024.